व्यक्तित्व
PERSONALITY

B.A — I - (H)
PAPER — I

फ्रायड ने अपने अध्ययनों द्वारा अचेतन अनुभवों के अस्तित्व को सिद्ध कर ऐसे मनोविज्ञान की स्थापना की, जिसका केंद्रीय आलोच्य विषय व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व के अध्ययन की महत्ता इस बात से अच्छी तरह प्रमाणित हो जाती है कि सभी मनोवैज्ञानिक क्रियाओं का स्वरूप व्यक्तित्व के स्वरूप से ही निर्धारित होता है तथा सभी मनोवैज्ञानिक क्रियाओं के सम्मिलित प्रभाव से ही व्यक्तित्व के स्वरूप का निर्धारण होता है। मनोविज्ञान का यही एक ऐसा विषय है जिसमें केवल मनुष्यों की चर्चा की जाती है, पशुओं की नहीं। व्यक्तित्व मनोविज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है जो सही अर्थ में जीवविज्ञान, समाजविज्ञान और मनोविज्ञान का संगमस्थल है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्तित्व का अध्ययन मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है।

'व्यक्तित्व' अंग्रेजी के परसनॉलिटी (Personality) शब्द का हिंदी रूपांतर है। परसनॉलिटी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के परसोना (Persona) से हुई है। 'परसोना' एक प्रकार के नकाब या मुखावरण (mask) को कहते हैं, जिसका उपयोग यूनानी ड्रामों में भाग लेनेवाले पात्र करते थे। इन नकाबों को चेहरे पर लगा लेने से यह स्पष्ट पता चल जाता था कि ड्रामा में विभिन्न पात्रों के कार्य किस ढंग के होंगे। इसी Persona शब्द से Personality शब्द बना, जिसका अर्थ बनावटी रूप होता है। इस शाब्दिक अर्थ में जिन लोगों ने व्यक्तित्व को परिभाषित करने की कोशिश की है उनलोगों ने मनुष्य की बाह्य रूप-रेखा, वेश-भूषा को ही व्यक्तित्व कहा है।

स्पष्ट है कि व्यक्तित्व में व्यक्ति के बाह्य रूप-रंग, वेश-भूषा आदि के साथ-साथ किसी कार्य करने के विशेष ढंग को प्रकट करनेवाले गुणों का समन्वय होता है तथा इसी समन्वय के फलस्वरूप उसका वातावरण के साथ अभियोजन 'अपूर्व' ढंग का होता है।

फिर भी, विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने की कोशिश की है।

मार्टिन प्रिंस (Morton Prince - 1924):— "व्यक्तित्व व्यक्ति के सभी जैविक, जन्मजात प्रकृति, मनोवेग, प्रवृत्ति, अभिलाषा, मूल प्रवृत्ति तथा अर्जित प्रकृति एवं प्रकृति के योगफल को कहते हैं।"

वाटसन (Watson - 1924):— "विश्वसनीय सूचनाएँ प्राप्त करने हेतु एक लंबे समय तक देखी गई आदतों एवं आदत-तत्वों के योगफल को ही व्यक्तित्व कहते हैं।"

मर्रे (Murray - 1948):— "मस्तिष्क में जन्म से मृत्यु तक होनेवाली संगठित शासकीय प्रक्रियाओं के सम्पूर्ण क्रम को व्यक्तित्व कहते हैं।"

गिलफोर्ड (Guilford):— "व्यक्तिगत विभिन्नताएँ व्यक्तित्व का पता करने की तार्किक कुंजी है। किसी व्यक्ति के शीलगुणों के अपूर्व प्रतिरूप व्यक्तित्व कहते हैं।"

क्रचफील्ड एवं क्रिचफन - 1975:— "व्यक्तित्व

Experiment No. .... Date ....

व्यक्ति के सभी गुणों या विशेषताओं के योग अथवा समन्वय का एक अपूर्व संगठन है जो नित्य बदलनेवाले वातावरण के अभियोजन - संबंधी उसकी चेष्टाओं द्वारा निर्धारित और परिमार्जित या संशोधित होता है।"

6. ऑलपोर्ट, एफ० (Allport, F) :— "व्यक्तित्व सामाजिक उत्तेजनाओं के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रियाओं एवं उसके वातावरण की सामाजिक विशेषताओं के साथ अभियोजन के गुण को कहते हैं।"

7. ऑलपोर्ट, जी० (Allport, G) :- (i) "यथार्थ रूप में मनुष्य जैसा है, वही व्यक्तित्व है।"
(ii) "व्यक्तित्व व्यक्ति के अंदर के उन मनःशारीरिक गुणों अथवा तंत्रों का गत्यात्मक संगठन है, जो उसके वातावरण के प्रति अपूर्व अभियोजन को निर्धारित करता है।"

8. शरमैन (Sherman) :— "व्यक्ति का विशिष्ट व्यवहार ही उसका व्यक्तित्व है।"

उपर्युक्त सभी परिभाषाएँ साधारण तौर पर समझे जानेवाले अर्थों से भिन्न हैं। इन परिभाषाओं में व्यक्तित्व को एक एकीकृत अथवा अविभाजित तथा पूर्ण व्यवहार-संबंधी विशेषता के रूप में चित्रित किया गया है। मनोविज्ञान के दृष्टि में "व्यक्तित्व - व्यक्तित्व होता है, कोई अच्छा या बुरा नहीं होता," विशिष्ट गुणों के कारण ही व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

Hrishi Kesh lal
Deptt- Psychology.
B.M.C. Rajaka

Next day

Remarks .... Teacher's Signature ....